हिन्दी दैनिक



एटा से प्रकाशित

गुरूवार 22 सितंबर 2022

प्रष्ठ : 8

मृत्य : 50 पैर

फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाने से होगा आर्थिक लाभ-डॉक्टर खलील

(अनवर अशरफ)

कानपुर (रहस्य संदेश)चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने "फसल अवशेषों को न जलाने जलाएं,बल्कि बनाये खादफ नामक किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि फसल अवशेषों में आग लगाने से वातावरण में हानिकारक गैसों की मात्रा बढ़ जाती है। जिससे मानव एवं पशु-पक्षियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। साथ ही सूचहम जीवो की भी मृत्यु हो जाती है। जो मिट्टी की उपजाऊ शक्ति एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखने के लिए आवश्यक है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों के जलाने से फास्फोरस और पोटाश जैसे पोशाक तत्व अघुलनशील अवस्था में हो जाते हैं। जिससे मृदा का पीएच मान बढ़ जाता है। और उसकी उर्वरा

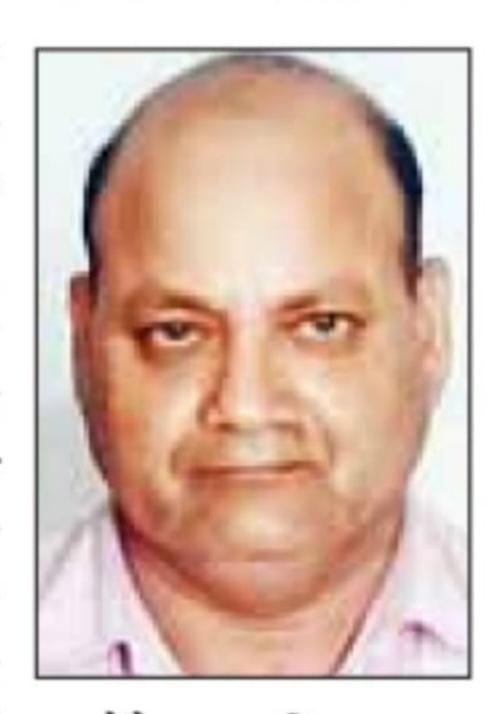


शक्ति नष्ट हो जाती है।इसके अतिरिक्त पशुओं के लिए चारे की कमी हो जाती है। डॉक्टर खान ने बताया कि कृषि अवशेष एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है जो मिट्टी के स्वास्थ्य और संरचना के लिए बहुत ही आवश्यक है। उन्होंने किसानों को बताया कि धान के पुआल को मृदा में मिलाने से 0.36 ब नाइट्रोजन, 0.10 ब फॉस्फोरस, 1.70 ब पोटाश, जबकि मका के फसल अवशेष में 0.47 बनाइट्रोजन, 0.50 ब

फॉस्फोरस एवं 1.65 ल पोटाश मिट्टी को प्राप्त हो जाता है। जिससे मृदा उपजाऊ हो जाती है और किसान भाइयों को आर्थिक लाभ होता है। डॉक्टर खान ने बताया कि फसल अवशेषों को मृदा में मिलाने से उनकी संरचना में सुधार, पर्यावरण सुधार, मृदा क्षरण व पोषक तत्वों की अधिकता, जल क्षमता में वृद्धि तथा आर्थिक लाभ में वृद्धि होती है।उन्होंने किसान भाइयों से फसल अवशेष न जलाने के लिए अपील की है।

फसल अवशोषों को मिट्टी में मिलाने से होगा आर्थिक लाभ

कानपुर, 21 सितम्बर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने फसल अवशेषों को न जलाने जलाएं, बल्कि बनाये खाद नामक किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि फसल अवशेषों में आग लगाने से वातावरण में हानिकारक गैसों की मात्रा बढ़ जाती है। जिससे मानव एवं पशु-पक्षियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। साथ ही सूचहम जीवो की भी मृत्यु हो जाती है। जो मिट्टी की उपजाऊ शक्ति एवं रोग



प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखने के लिए आवश्यक है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों के जलाने से फास्फोरस और पोटाश जैसे पोशाक तत्व अघुलनशील अवस्था में हो जाते हैं। जिससे मृदा का पीएच मान बढ़ जाता है। और उसकी उर्वरा शक्ति नष्ट हो जाती है। जो मिट्टी के स्वास्थ्य और संरचना के लिए बहुत ही आवश्यक है। उन्होंने किसानों को बताया कि धान के पुआल को मृदा में मिलाने से 0.36 प्रतिशत नाइट्रोजन, 0.10 प्रतिशत फॉस्फोरस, 1.70 प्रतिशत पोटाश,जबकि मक्का के फसल अवशेष में 0.47 प्रतिशत नाइट्रोजन,0.50 प्रतिशत फॉस्फोरस एवं 1.65 प्रतिशत पोटाश मिट्टी को प्राप्त हो जाता है। जिससे मृदा उपजाऊ हो जाती है और किसान भाइयों को आर्थिक लाभ होता है। डॉक्टर खान ने बताया कि फसल अवशेषों को मृदा में मिलाने से उनकी संरचना में सुधार, पर्यावरण सुधार, मृदा क्षरण व पोषक तत्वों की अधिकता, जल क्षमता में वृद्धि तथा आर्थिक लाभ में वृद्धि होती है।उन्होंने किसान भाइयों से फसल अवशेष न जलाने के लिए अपील की है।

हिंदुस्तान कानपुर देहात 22/09/2022 फिर्सल अवशेष प्रबंधन के

लिए शुरू हुआ अभियान

कानपुर देहात, संवाददाता।धान की फसल की कटाई के पहले ही किसानों को पराली जलाने से रोकने के लिए कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर की ओर से जागरूकता अभियान शुरु किया गया है। इसमें किसानों को अवशेष प्रबंधन के फायदे बताए जा रहे हैं।

मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने ''फसल अवशेषों को न जलाने जलाएं,बल्कि बनाये खाद'' के नाम से किसानों के लिए एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि फसल अवशेषों में आग लगाने से वातावरण में हानिकारक गैसों की मात्रा बढ़ जाती है। इससे मानव एवं पशु-पक्षियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। साथ ही सूक्ष्म जीवों की भी मृत्यु हो जाती है। जो मिट्टी की उपजाऊ शक्ति एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखने के लिए आवश्यक है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों के जलाने से फास्फोरस और पोटाश जैसे पोषक तत्व अघुलनशील अवस्था में हो जाते हैं।

इससे मृदा का पीएच मान बढ़ जाता है और उसकी उर्वरा शक्ति नष्ट हो जाती है। इसके अतिरिक्त पशुओं के लिए चारे की कमी हो जाती है। उन्होंने बताया कि कृषि अवशेष एक

- केवीके के वैज्ञानिकों ने किसानों को शुरू किया जागरूक करना
- फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाने से होगा आर्थिक लाभ

महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है जो मिट्टी के स्वास्थ्य और संरचना के लिए बहुत ही आवश्यक है।

उन्होंने किसानों को बताया कि धान के पुआल को मृद्रा में मिलाने से 0.36 प्रतिशत नाइट्रोजन, 0.10 प्रतिशत फॉस्फोरस, 1.70 प्रतिशत पोटाश, जबिक मक्का के फसल अवशेष में 0.47 प्रतिशत नाइट्रोजन,0.50 प्रतिशत फॉस्फोरस एवं 1.65 प्रतिशत पोटाश मिट्टी को प्राप्त हो जाता है। इससे मृदा उपजाऊ हो जाती है और किसान भाइयों को आर्थिक लाभ होता है। फसल अवशेषों को मृदा में मिलाने से उनकी संरचना में सुधार, पर्यावरण सुधार, मृदा क्षरण व पोषक तत्वों की अधिकता, जल क्षमता में वृद्धि तथा आर्थिक लाभ में वृद्धि होती है। उन्होंने किसानों से फसल अवशेष न जलाने के लिए अपील की है।



बुधवार २१ सितंबर २०२२ अंक - 248

स्वस्य एतस्य



www.twitter.com/worldkhabarexpress



www.facebook.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpress





'फसल अवशेषों को मिद्टी में मिलाने से होगा आर्थिक लाभ'

कानपुर । चंद्रशेखर आदाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचातित कृषि विद्वान केंद्र दृतीय नगर के मदा वैज्ञानिक दाँ खलील खान ने 'फसल अवशेषों को न जलाने जलारं, बरिक बनाये खाद' नमक किसानों हेतु एडबाइनरी जारी की है। उन्होंने बताया कि पत्सल अवहोंबों में आन लगाने से वातावरण में ब्रानिकारक रैसों की मात्रा कर जाती है। जिससे मानव एवं पत्त-पश्चिमों के स्वास्थ्य पर प्रतिकृत प्रभाव पहुँता है। साथ ही सुभ्य जीवों को भी मृत्यू हो जाती है। जो मिटरी की उपजाऊ शक्ति एवं रोग प्रतिरोधक श्रमता बनाए रखने के लिए आयरपक है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों के जलाने से फास्फोरम और पोटात जैसे पोताक तल अधलनतील अवस्था में हो जाते हैं। जिससे मुद्रा का पीएच मान बढ़ जाता है। और उसकी उर्वर रुक्ति जुए हो जाती है। इसके अतिरिक्त



पतुओं के लिए चारे की कमी हो जाती है। जॉक्टर खान ने चताया कि कृषि अखलेष एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संस्वधन है. जो मिन्ने के स्वास्थ्य और मारचना के लिए बात ही आवस्पक है। उन्होंने किसानों को बतावा



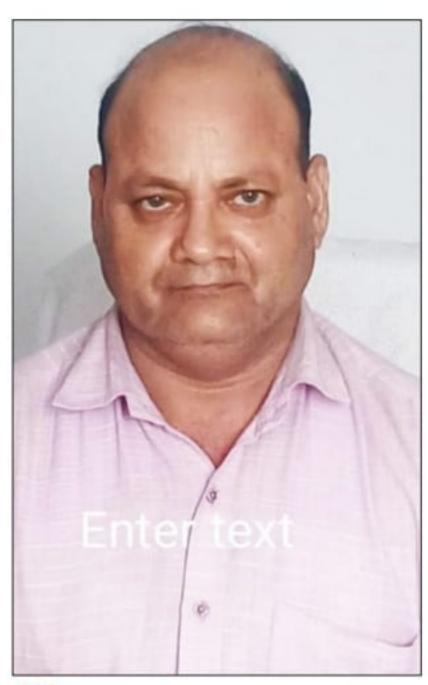
कि धान के पुजाल को मुद्रा में मिलाने से 0.36 प्रतिशत नाइदोजन, 0.10 प्रतिशत पर्धेमधेरम, 1.70 प्रतितत पोटाल, जलकि मक्का के पत्मल अवशेष में 0.47 प्रतिशत नाइट्रोजन, 0.50 प्रतिशत फॉस्फोरम एवं

1.65 प्रतिशत पोराश मिझे को प्राप शे जात है। जिससे मुद्य उपजाक हो जाती है और किसान भागों को अधिक लाभ होता है। ऑक्टर खान ने बताया कि पामल अवहोषों को मुद्र में मिलाने से उनकी



संरचना में सुधार, पर्याचरण सुधार, मृदा क्षरण व पोषक तलों को अधिकता, जल धमता में वृद्धि तथा आर्थिक लाभ में वृद्धि होते है। उन्होंने किस्तून भएकों से प्रस्त अवशेष न जलाने के लिए अपील की है।

फसल अवशेषों को मिट्टी में मिलाने से होगा आर्थिक लाभ



] जित्तार टाइम्स



डीटीएनएन

कानपुर । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर के अधीन संचालित कृषि विज्ञान केंद्र दलीप नगर के मृदा वैज्ञानिक डॉ खलील खान ने फसल अवशेषों को न जलाने जलाएं,बल्कि बनाये खादङ नामक किसानों हेतु एडवाइजरी जारी की है। उन्होंने बताया कि फसल अवशेषों में आग लगाने से वातावरण में हानिकारक गैसों की मात्रा बढ़ जाती है। जिससे मानव एवं पशु-पक्षियों के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। साथ ही सूचहम जीवो की भी मृत्यु हो जाती है। जो मिट्टी की उपजाऊ शक्ति एवं रोग प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखने के लिए आवश्यक है। उन्होंने कहा कि फसल अवशेषों के जलाने से फास्फोरस और पोटाश जैसे पोशाक तत्व अघुलनशील अवस्था में हो जाते हैं। जिससे मृदा का पीएच मान बढ़ जाता है। और उसकी उर्वरा शक्ति नष्ट हो जाती है।इसके अतिरिक्त पशुओं के लिए चारे की कमी हो जाती है। डॉक्टर खान ने बताया कि कृषि अवशेष एक महत्वपूर्ण प्राकृतिक संसाधन है जो मिट्टी के स्वास्थ्य और संरचना के लिए बहुत ही आवश्यक है। उन्होंने किसानों को बताया कि धान के पुआल को मृदा में मिलाने से 0.36त्र नाइट्रोजन, 0.10त्र फॉस्फोरस, 1.70त्र पोटाश,जबिक मक्का के फसल अवशेष में 0.47त्ननाइट्रोजन,0.50त्न फॉस्फोरस एवं 1.65त्न पोटाश मिट्टी को प्राप्त हो जाता है। जिससे मृदा उपजाऊ हो जाती है और किसान भाइयों को आर्थिक लाभ होता है। डॉक्टर खान ने बताया कि फसल अवशेषों को मृदा में मिलाने से उनकी संरचना में सुधार, पर्यावरण सुधार, मृदा क्षरण व पोषक तत्वों की अधिकता, जल क्षमता में वृद्धि तथा आर्थिक लाभ में वृद्धि होती है। उन्होंने किसान भाइयों से फसल अवशेष न जलाने के लिए अपील की है।

